

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 2, गलतफहमियाँ पैगम्बर्स

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स हैं, जो यिर्मयाह की पुस्तक की प्रस्तुति में हमारा नेतृत्व कर रहे हैं। सत्र 2 में वह पुराने नियम के भविष्यवक्ता के रूप में यिर्मयाह की चर्चा जारी रखेंगे। सत्र दो में, वह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संबंध में आम गलतफहमियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

यिर्मयाह की पुस्तक पर हमारे दूसरे सत्र में, हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के प्रकाश में यिर्मयाह के संदेश के बारे में सोचना जारी रख रहे हैं। और फिर, भविष्यवक्ता बाइबल का एक हिस्सा हैं जिससे हममें से बहुत से लोग परिचित नहीं हैं। यह कुछ ऐसा हो सकता है जिसे हमने पढ़ा या अध्ययन नहीं किया है, या हमारे चर्चों में इसके बारे में कई संदेश नहीं सुने हैं।

इसलिए, इस सत्र में, मैं भविष्यवक्ताओं के बारे में कुछ आम गलतफहमियों के बारे में बात करना चाहूँगा और उसे सही करने की कोशिश करूँगा और हमें यिर्मयाह को परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में चित्रित करने की बेहतर समझ प्रदान करूँगा। याद रखें, हमारे पिछले सत्र में, हमने भविष्यवक्ताओं के बारे में तीन बातों पर बात की थी जो मुझे लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण हैं। नंबर एक, वे परमेश्वर के पहरदार हैं।

वे आने वाले न्याय की घोषणा कर रहे थे। प्रभु ने इस्राएल में चल रहे एक विशेष संकट के लिए लेखन भविष्यवक्ताओं को खड़ा किया। नंबर दो, वे ईश्वर के संदेशवाहक हैं।

वे वहाँ अपने शब्द बोलने के लिए नहीं हैं। वे वहाँ परमेश्वर के शब्द बोलने के लिए हैं। और तीसरी बात, वे वाचा के संदेशवाहक हैं।

परमेश्वर की चेतावनियों और उन अनुबंधों के शापों के आधार पर, भविष्यवक्ता न्याय की घोषणा कर रहे हैं। उन अनुबंधों के वादों के आधार पर, भविष्यवक्ता आशीर्वाद और चीजों का वादा कर रहे हैं जो भगवान लोगों के लिए करेंगे। लेकिन फिर भी, भविष्यवक्ताओं के बारे में कुछ बड़ी गलतफहमियाँ हैं जिन्हें मैं इस सत्र में संबोधित करने का प्रयास करना चाहूँगा।

पहली गलतफहमी जिसके बारे में मैं अक्सर लोगों को पैगम्बरों को संबोधित करते समय बात करते हुए सुनता हूँ, वह यह है कि उन्हें अक्सर एक उग्र ईश्वर के क्रोधित दूत के रूप में देखा जाता है जो लोगों को नष्ट करने के लिए उत्सुक है। और शायद हम एक ऐसे उपदेशक के बारे में सोचते हैं जो लाल चेहरे और गर्दन में उभरी हुई नसों के साथ उपदेश देता है और भगवान के फैसले के बारे में बात करने का आनंद लेता है। बहुत से लोगों के मन में भविष्यवक्ताओं की यही छवि है।

कई मायनों में, जैसा कि हम यिर्मयाह को देख रहे हैं, हम क्रोधित परमेश्वर का संदेश देखने जा रहे हैं। यिर्मयाह के माध्यम से काम करते हुए मुझे जोनाथन एडवर्ड्स की याद आती है, क्रोधित परमेश्वर के हाथों में पापी। यिर्मयाह जो भी बोलने जा रहा है उसका सारांश यही है।

यिर्मयाह एक जगह कहता है, मैं परमेश्वर के क्रोध और क्रोध से भरा हुआ हूँ। और हम निश्चित रूप से उस संदेश को बाहर आते हुए देखते हैं। न्याय और उसकी गंभीरता की चरम तस्वीरें और छवियाँ हैं।

यिर्मयाह अध्याय 9, श्लोक 21 में, मौत की एक तस्वीर है जो खिड़कियों से घुसकर यहूदा के लोगों की जान ले रही है। और फिर उसके परिणामस्वरूप होने वाला शोक और दुख। यिर्मयाह यहूदा को परमेश्वर की बेवफा पत्नी के रूप में चित्रित करने जा रहा है।

और हम अपने बाद के किसी सत्र में इस पर गौर करेंगे। अध्याय 13, श्लोक 26 और 27 में, प्रभु कहते हैं कि वह उसे नग्न कर देंगे और सभी राष्ट्रों के सामने उसकी लज्जा को उजागर करेंगे। हमने उसे पढ़ा, और हम कल्पना से घबरा गए।

यिर्मयाह अध्याय 12 पद 13 प्रभु के भयंकर क्रोध का संदर्भ देता है। और यिर्मयाह 23 20 कहता है कि यहोवा का भड़का हुआ क्रोध तब तक शांत नहीं होगा जब तक कि वह वह सब कुछ पूरा न कर ले जो उसने बनाया था और जो उसने चाहा था। तो, क्या भविष्यवक्ता क्रोधित न्याय के दूत थे? बिल्कुल।

लेकिन भविष्यवक्ताओं का दूसरा पहलू जिसे हमें समझने की ज़रूरत है, वह यह है कि ईश्वर के प्रेम, दया और करुणा की कुछ सबसे हार्दिक अभिव्यक्तियाँ और भावुक अभिव्यक्तियाँ भी भविष्यवक्ताओं में पाई जाती हैं। ब्रेंट सैंडी ने अपनी पुस्तक प्लॉशियर्स एंड प्रूनिंग हुक्स में कहा है कि भविष्यवक्ताओं में, हमें ईश्वर का प्रेम और ईश्वर का क्रोध चरम सीमा पर देखने को मिलता है। और इसलिए, हम ईश्वर के क्रोध की सबसे चरम अभिव्यक्तियाँ देखते हैं, लेकिन इसके साथ ही, हम ईश्वर के प्रेम की कुछ सबसे खूबसूरत तस्वीरें भी देखते हैं।

मैं यिर्मयाह अध्याय 31, श्लोक 2 के बारे में सोचता हूँ, जहाँ प्रभु कहते हैं, मैंने तुमसे सदा प्रेम किया है। और यह बात इस्राएल और हमारे लिए भी याद दिलाती है कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो परमेश्वर को अपने लोगों से कम प्रेम करने के लिए प्रेरित कर सके। ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसके लोगों को प्रेम करने के लिए प्रेरित कर सके या परमेश्वर को अपने लोगों से अधिक प्रेम करने के लिए प्रेरित कर सके क्योंकि वह उनसे सदा प्रेम करता है।

और इस तथ्य के बावजूद कि उनका उग्र क्रोध वापस नहीं आएगा, वह प्यार अभी भी है। होशे 11 पद 8 और 9 में यहोवा इस्राएल का न्याय करने को तैयार हो कर कहता है, हे एप्रैम, मैं तुझे कैसे छोड़ दूँ? क्योंकि यहोवा इन लोगों से प्रेम रखता है। और इसलिए, वह कहते हैं, इसके परिणामस्वरूप, मैं अपना सारा गुस्सा पूरी तरह से निष्पादित नहीं कर पाऊंगा क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, और मैं उससे पीछे नहीं हट सकता।

यशायाह 40 में, जैसा कि भगवान ने लोगों को निर्वासन से वापस लाने का वादा किया है, वह खुद को एक चरवाहे के रूप में चित्रित करता है जो अपनी भेड़ों को कोमलता और स्नेह से अपनी बाहों में ले जा रहा है और यह सुनिश्चित कर रहा है कि वे इस पूरी प्रक्रिया में बिल्कुल सुरक्षित

रहेंगे। भगवान यही करने जा रहा है। यह जकेल अध्याय 33, श्लोक 11 में प्रभु कहते हैं, मैं दुष्टों की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता।

इसीलिए प्रभु ने सबसे पहले भविष्यवक्ताओं को पहरेदार के रूप में भेजा। यदि परमेश्वर की इच्छा केवल लोगों को नष्ट करने की होती, तो वह ऐसा कर सकता था। परन्तु उसने न्याय से पहले भविष्यवक्ताओं को भेजा ताकि लोगों को पश्चात्ताप करने का मौका मिल सके।

ऐसा उन्होंने प्यार के इजहार के तौर पर किया। अमोस की पुस्तक में, ईश्वर निर्णय में देरी करता है ताकि लोग समय से पहले चेतावनियाँ सुन सकें। और यह संभावना हमेशा थी कि यदि लोग प्रतिक्रिया देंगे, यदि लोग सुनेंगे, यदि लोग आज्ञा मानेंगे और अपने तरीके बदलेंगे, तो भगवान निर्णय भेजने से पीछे हट जायेंगे।

समस्या यह है कि यिर्मयाह की पुस्तक में, जैसा कि यिर्मयाह इस संदेश का प्रचार कर रहा है, एकमात्र चीज जिसका उसे सामना करना पड़ेगा वह है उदंड विद्रोह। और अध्याय 8 में लोग कहेंगे, हम समर्थ नहीं हैं, हम लौटकर नहीं आयेंगे। अध्याय 44, हम अपने बुतपरस्त संस्कार करना जारी रखेंगे।

लेकिन भविष्यवक्ताओं ने हमें अपने लोगों के लिए परमेश्वर के अद्भुत प्रेम के बारे में कई बातें बताई हैं। मेरा पसंदीदा उदाहरण यशायाह अध्याय 49, श्लोक 14 और उसके बाद के अध्यायों में मिलता है। और यहाँ इस्राएल के लोगों ने क्या कहा है।

सिय्योन ने कहा, प्रभु ने मुझे त्याग दिया है, और मेरे प्रभु ने मुझे भूला दिया है। जब वे निर्वासन के बारे में सोच रहे थे और वे बेबीलोनियों से हार गए, तो उन्हें ले जाया गया और देश से बाहर भेज दिया गया। उनका जवाब था कि परमेश्वर ने हमें भूला दिया है।

भगवान को हमारी परवाह नहीं है। शायद यह भावना भी कि भगवान वास्तव में इस बारे में कुछ नहीं कर सकते। बेबीलोन के देवता भगवान से भी अधिक शक्तिशाली हैं।

प्रभु ने मुझे त्याग दिया है, और मेरे प्रभु ने मुझे भूला दिया है। सुनिए परमेश्वर अपने लोगों से इसके जवाब में क्या कहता है। पद 15 में, क्या कोई स्त्री अपने दूध पीते बच्चे को भूल सकती है कि उसे अपने गर्भ से जन्मे बेटे पर दया न आए? वह कहता है, क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने लोगों से प्रेम करना छोड़ सकता हूँ? अच्छा, क्या कोई स्त्री उस बच्चे से प्रेम करना छोड़ सकती है, जिसे वह अपने स्तन से दूध पिलाती है? और फिर प्रभु कहते हैं, भले ही ऐसा हो सकता है, और हम मानवीय स्तर पर इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते, प्रभु कहते हैं, फिर भी मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा।

फिर वह सिय्योन से कहता है, और वह कहता है कि मैंने तुम्हें अपने हाथों की हथेलियों पर उकेरा है। और इसलिए, एक अर्थ में, प्रभु के पास अपने लोगों का टैटू है, और उसके एक हाथ पर सिय्योन है; उसके पास शहर की एक छवि है। और इसलिए, पहली चीज़ जो परमेश्वर हमेशा देखता है, पहली छवि जो परमेश्वर हमेशा अपने लोगों के बारे में जानता है, वह उन्हें कभी नहीं भूलता है।

वे कभी भी उसके दिमाग से बाहर नहीं होते। वे कभी भी उसकी चेतना से बाहर नहीं होते। और इसलिए, भविष्यवक्ता, हाँ, वे क्रोधित ईश्वर के दूत हैं, लेकिन वे हमें ईश्वर के अविश्वसनीय प्रेम की भी याद दिलाते हैं।

वे पूर्ववर्ती हैं जो हमें यह समझने में मदद करते हैं कि रोमियों अध्याय आठ में पॉल क्या कहता है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें कभी भी ईश्वर के प्रेम से अलग कर सके। हम परमेश्वर के क्रोध और परमेश्वर के प्रेम की चरम सीमा को देखते हैं। और ये दोनों बातें भविष्यवक्ताओं के संदेश का हिस्सा हैं।

मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं के बारे में दूसरी गलतफहमी यह है कि भविष्यवक्ता केवल भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करने वाले थे। हम उन्हें क्रिस्टल बॉल गेजर के रूप में भी सोच सकते हैं जो भविष्य और उनकी भूमिका और उनके लक्ष्य और उनके मिशन को देख रहे हैं, उनका संदेश हमें यह बताने के बारे में था कि अंतिम दिनों में चीजें कैसी होने वाली हैं। एक खेल प्रशंसक के रूप में, मैं भविष्यवक्ताओं को ऐसे लोगों के रूप में सोचता हूँ जो हर खेल और इस स्थिति में परिणाम की पहले से ही सटीक भविष्यवाणी कर सकते हैं।

और यह समझना महत्वपूर्ण है कि भविष्यवक्ता भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करने वाले थे। वे 66% मामलों में सही नहीं थे। वे 50% मामलों में सही नहीं थे।

वे 95% बार सही नहीं होते। व्यवस्थाविवरण 18 कहता है कि अगर प्रभु किसी भविष्यवक्ता को भेजता है और अगर वह भविष्यवाणियाँ करता है, तो यह जानने का एकमात्र तरीका है कि वह सच्चा भविष्यवक्ता है, वह 100% बार सही होता है क्योंकि परमेश्वर हमेशा सही होता है। वह कभी झूठ नहीं बोलता।

वह कभी भी कोई ऐसी बात नहीं कहता जो असत्य हो। और इसलिए, परमेश्वर का सच्चा भविष्यवक्ता, जैसा कि उसने भविष्य की भविष्यवाणी की थी, हमेशा सही था। लेकिन यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि भविष्य की भविष्यवाणी करना प्राथमिक संदेश या भविष्यवक्ताओं की भूमिका नहीं थी।

किसी ने कहा है कि भविष्यवक्ताओं का दो-तिहाई उपदेश भविष्यवाणी करने वाला था। भविष्यवक्ताओं के उपदेशों का एक तिहाई भाग भविष्यवाणी करना है। भविष्यवाणी से हमारा तात्पर्य केवल उपदेश देना, ईश्वर का संदेश संप्रेषित करना, ईश्वर के वचन को बताना और लोगों को उपदेश देना है।

और यह भविष्यवक्ताओं के संदेश का दो-तिहाई हिस्सा है। और मेरा मानना है कि आज हमें चर्चों में पैगम्बरों की आवश्यकता होने का एक कारण यह है कि वे उस समय लोगों की जरूरतों, चिंताओं, समस्याओं, भगवान के साथ संबंधों के बारे में प्रचार कर रहे थे। और जैसे-जैसे आप भविष्यवक्ताओं को जानते हैं, आप समझते हैं कि वे उन्हीं मुद्दों, उन्हीं समस्याओं से निपट रहे थे जिनसे हम अपने जीवन में निपट रहे हैं।

भविष्यवक्ताओं के दो-तिहाई उपदेश इसी प्रकार के मुद्दों से संबंधित हैं - बस लोगों से उनके पाप के बारे में बात करना, ईश्वर से प्रेम करने की उनकी आवश्यकता और ईश्वर में विश्वास की आवश्यकता के बारे में बात करना। और फिर उनका एक तिहाई उपदेश भविष्य की भविष्यवाणी या भविष्यवाणी करना है।

अब, जब हम पीछे जाते हैं, तो उनमें से ज्यादातर भविष्यवाणियाँ, यिर्मयाह यीशु के समय से 500 साल पहले रहते थे। उनमें से ज्यादातर भविष्यवाणियाँ और वे घटनाएँ अतीत के इतिहास में घटित हुई चीजों से संबंधित हैं। वास्तव में, उनमें से कई ऐसी चीजों से संबंधित हैं जो नए नियम और यीशु के समय से पहले ही निकट भविष्य में होने वाली हैं।

फ्री और स्टीवर्ट ने अपनी पुस्तक, हाउ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ में हमें ये आँकड़े दिए हैं। वे कहते हैं कि जब हम भविष्यवक्ताओं को देखते हैं, तो पाते हैं कि उनकी 2% से भी कम भविष्यवाणियाँ मसीहाई भविष्यवाणियाँ हैं। उनकी 5% से भी कम भविष्यवाणियाँ नई वाचा के युग से संबंधित हैं और उनकी 1% से भी कम भविष्यवाणियाँ ऐसी घटनाओं से संबंधित हैं जो अभी भी भविष्य में हैं।

और बहुत से लोग भविष्यवक्ताओं के पास जाते हैं या वे भविष्यवक्ताओं के बारे में केवल युगांतशास्त्र के संदर्भ में सोचते हैं या केवल इस संदर्भ में, हम इन पुस्तकों में जाना चाहते हैं और भविष्य के लिए एक रोडमैप ढूँढना चाहते हैं। भविष्यवक्ताओं में बहुत कम है। उनके पास कहने के लिए महत्वपूर्ण बातें हैं।

परमेश्वर का राज्य आने वाला है। परमेश्वर का मसीहा शासन करेगा और राज्य करेगा। ईश्वर अपने वादों को निभाएगा और पूरा करेगा, लेकिन वे हमें भविष्य की एक सामान्य तस्वीर देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, न कि हमारे सभी सवालों का जवाब देने के लिए, न कि सभी गूढ़ पहलियों और रहस्यों को सुलझाने के लिए।

और इसलिए, अगर हम इस तरह के उत्तरों की तलाश में भविष्यवक्ताओं के पास जाते हैं, तो हम वास्तव में उन चीजों के लिए उनसे उम्मीद कर रहे हैं जो उनके मंत्रालय का प्राथमिक ध्यान नहीं थीं। बहुत से लोग सोचते हैं कि भविष्यवक्ताओं में प्राथमिक मुद्दा यह है कि आप प्रीमिलेनियल, एमिलेनियल, पोस्टमिलेनियल, प्री-ट्रिब, मिड-ट्रिब या पोस्ट-ट्रिब हैं। ऐसी चीजें हैं जो उन मुद्दों से संबंधित हैं, लेकिन यह प्राथमिक चीज़ नहीं होगी जिसके बारे में हम बात करते हैं और चर्चा करते हैं जब हम उनका अध्ययन करते हैं।

जब मैं अक्सर लोगों को बताता हूँ कि मैं एक मदरसे में पढ़ाता हूँ और पुराने नियम के पैगम्बरों को पढ़ाता हूँ, तो अक्सर कई सवाल उठते हैं। और उनमें से कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं, आप क्या मानते हैं कि मसीह विरोधी कौन है? या क्या आप मानते हैं कि यीशु निकट भविष्य में वापस आ रहे हैं? क्या हम 9-11 की घटनाओं के बाद अंतिम दिनों में जी रहे हैं? क्या बाइबल में 9-11 की भविष्यवाणी की गई थी? क्या इराक और अफगानिस्तान में युद्ध के बारे में कुछ है? क्या बाइबल में इसके बारे में कुछ है? और अक्सर बहुत से लोग अपनी बाइबिल लेते हैं, और विशेष रूप से वे भविष्यवक्ताओं को लेते हैं, और वे उन चीजों की तलाश में जाते हैं जो आज के अखबार में हैं।

और जब आप ईसाई चर्च के इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो आपको एहसास होता है कि लोग पूरे इतिहास से ऐसा करते आ रहे हैं, और ऐसा करने में उन्होंने कुछ बड़ी गलतियाँ की हैं।

गलतियाँ बाइबल में नहीं हैं। गलतियाँ उन तरीकों में होती हैं जिनसे हम निपटते हैं। और इसलिए, मेरा मानना है कि यहां ऐसी चीजें हैं जो भविष्य के बारे में हमारी समझ को सूचित करती हैं।

यिर्मयाह मुझे बहुत उम्मीद देता है कि परमेश्वर नियंत्रण में है और परमेश्वर का राज्य आने वाला है। यशायाह, कि प्रभु अपना राज्य पुनः स्थापित करने जा रहा है और सियोन को पहाड़ों में सबसे ऊँचा बनाया जाएगा। लेकिन कई खास बातें जो हम जानना चाहते हैं, वह यह कि मसीह विरोधी कौन है? संयुक्त राज्य अमेरिका का भविष्य क्या है? पश्चिम और कट्टरपंथी इस्लाम के बीच संघर्ष में क्या चल रहा है? 1948 में स्थापित हुए इसराइल राष्ट्र का क्या होगा? भविष्यवक्ता हमेशा उन मुद्दों को संबोधित नहीं करते हैं।

हमें उनकी भविष्यवाणियों को उनके समय और परिस्थितियों में होने वाली घटनाओं के संदर्भ में देखना होगा। और इसलिए, हम केवल यिर्मयाह के पास जाकर यिर्मयाह की आयतों को निकालकर उन्हें अंत के समय में होने वाले महा क्लेश से नहीं जोड़ते। हम यशायाह की पुस्तक की ओर नहीं मुड़ते जैसा कि हाल ही में कुछ लोकप्रिय अध्ययनों में किया गया है और कहा गया है कि यह अमेरिका पर ईश्वर के न्याय के बारे में है।

भविष्यवक्ता इस्राएल और यहूदा पर ईश्वर के न्याय के बारे में बात कर रहे हैं, और वे उन विशिष्ट चीजों से निपट रहे हैं जो उनके समय और उनके संदर्भ में होने वाली थीं। इसलिए, अगर हम भविष्यवक्ताओं में इस तरह के उत्तरों की तलाश करते हैं, तो मुझे लगता है कि अंततः, या तो हम निराश होने वाले हैं, या दो, हम भविष्यवक्ताओं के संदेश को गलत तरीके से प्रस्तुत करने और गलत व्याख्या करने वाले हैं। और ईमानदारी से कहूँ तो, जब मैं लोकप्रिय ईसाई संस्कृति में भविष्यवक्ताओं के साथ किए जाने वाले कई तरीकों को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि हम इस तरह की चीजें होते हुए देखते हैं।

एक तीसरी गलतफ़हमी है, और वास्तव में मैं चाहता हूँ कि आज हमारे पाठ का फोकस इसी पर हो। तीसरी गलतफ़हमी यह है कि बहुत से लोग मानते हैं कि पुराने नियम के तहत पुराने नियम में पैगंबर लोगों के लिए भगवान के दूत थे। इसलिए, उनका संदेश आज हमारे लिए वास्तव में प्रासंगिक नहीं है।

पैगम्बर यीशु से सैकड़ों वर्ष पहले आये थे। उन्होंने उन चीजों के बारे में भविष्यवाणी की कि वे जो भविष्यवाणी कर रहे थे वह वास्तविकता पहले ही घटित हो चुकी है। तो, उनका संदेश आज हमारे लिए कैसे प्रासंगिक हो सकता है? खैर, मैं चाहता हूँ कि हम यह समझें कि युगांतशास्त्र और हमारे युगांतशास्त्रीय पदों के बारे में सोचने के बजाय, भविष्यवक्ता हमें मुख्य रूप से कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण जीवन के मुद्दों और चीजों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहते हैं जो भगवान के साथ हमारे रिश्ते और हमारे मिशन से संबंधित हैं। चर्च आज.

एक अंश जो मुझे लगातार इसकी याद दिलाता है, वह है यशायाह की पुस्तक यशायाह अध्याय 5 को देखना। और यशायाह आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में इज़राइल और यहूदा की संस्कृति का

वर्णन करता है। और जब मैंने उस अंश को कई तरीकों से पढ़ा, तो मैं समझ गया कि वह एक ऐसी संस्कृति को संबोधित कर रहा है, जो अपने सभी मतभेदों और सभी समय अंतराल के साथ, यह एक ऐसी संस्कृति है जो बिल्कुल वैसी ही है जहां हम आज हैं। वह उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो खेत से खेत जोड़ते हैं और धन-संपत्ति से लबालब रहते हैं।

वह उन लोगों के बारे में बात करता है जो आनंद में डूबे हुए हैं और वे कटोरे भरकर शराब पीते हैं और वे केवल शराब और अपने आनंद को संतुष्ट करने से चिंतित हैं। कई मायनों में यही आज हमारी संस्कृति है। वह उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो नैतिक भ्रम से अभिभूत हैं और उनका कहना है कि ये वे लोग हैं जो अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा कहते हैं।

और जब मैं कोई टेलीविज़न न्यूज़ शो या रेडियो कॉल-इन शो देखता हूँ, और लोग गर्भपात या समलैंगिकता जैसे मुद्दों पर बात करते हैं, तो मुझे एहसास होता है कि हम उस तरह की संस्कृति में रह रहे हैं। उन लोगों पर धिक्कार है जो अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा कहते हैं। जब हम धर्मग्रंथों को त्याग देते हैं, तो हम अपना नैतिक केंद्र खो देते हैं, और यही उन लोगों के साथ भी हुआ।

यशायाह ने उन लोगों का भी वर्णन किया है जो अहंकारी हैं और जो परमेश्वर की अवहेलना करते हैं, और वे कहते हैं, अरे यशायाह, अगर तुम परमेश्वर के न्याय के बारे में बात करने जा रहे हो, तो उसे जल्दी करो, उसे जल्दी करो, उसे जल्दी करो और उस न्याय को लाओ। और यशायाह कहता है कि प्रभु जल्दी करने जा रहा है। और अश्वरू जल्दी आने वाले हैं, और जब वे परमेश्वर के न्याय को लागू करेंगे, तो यह बहुत जल्दी होने वाला है।

तो, जिस संस्कृति से भविष्यवक्ता निपट रहे थे - हाँ, इसमें बहुत बड़ा समय अंतराल है - वह हमारी संस्कृति से बहुत मिलती जुलती है। जब मैं भविष्यवक्ताओं का अध्ययन करता हूँ, तो मैं यिर्मयाह का अध्ययन करता हूँ और भविष्यवाणी साहित्य के पूरे संग्रह के प्रकाश में यिर्मयाह को देखता हूँ। जीवन के तीन मुख्य मुद्दे हैं जिन्हें भविष्यवक्ता विशेष रूप से संबोधित करते हैं। पहला यह है कि भविष्यवक्ता मूर्तिपूजा की समस्या के बारे में बात करने जा रहे हैं।

और लोगों ने परमेश्वर की पूजा करने के बजाय, दूसरे देवताओं की पूजा की ओर रुख कर लिया है। और खास तौर पर इस्राएल के लिए, कनानी देवताओं, बाल, महिला प्रजनन देवी की पूजा, और सभी रीति-रिवाज और अनुष्ठान, यह कुछ ऐसा था जो इस्राएल के पूरे इतिहास में चलता रहा। यह कुछ ऐसा था जो यिर्मयाह के दिनों में विशेष रूप से प्रमुख था।

और इसलिए, मैं कुछ अंशों पर नज़र डालना चाहूँगा जो हमें यिर्मयाह को समझने के लिए तैयार करते हैं, जहाँ वह मूर्तिपूजा के इस मुद्दे को संबोधित करने जा रहा है। मेरे पसंदीदा में से एक यिर्मयाह अध्याय 2, श्लोक 13 में है, जहाँ यिर्मयाह एक शक्तिशाली छवि का उपयोग करने जा रहा है। वह यह कहता है, मेरे लोगों ने दो बुराइयाँ की हैं।

उन्होंने मुझे, जीवन के जल के सोते को त्याग दिया है, और उन्होंने अपने लिए कुण्ड बना लिए हैं, टूटे हुए कुण्ड जो पानी को रोक नहीं सकते। अब, जिस दुनिया में यिर्मयाह रहता था, उसमें कुण्ड

बहुत महत्वपूर्ण थे क्योंकि इस्राएल में वर्षा का पानी और पानी कीमती था। और कुण्ड उस पानी को रोकने के लिए बनाए गए थे।

यिर्मयाह उन मूर्तियों की तुलना करता है जिनकी ओर लोग मुड़े हुए हैं, जैसे कि टूटे हुए कुंड। जीवन के लिए जिन चीज़ों की उन्हें ज़रूरत है, वे बाहर निकल जाएंगी। और मूर्ति वास्तव में ऐसी कोई भी चीज़ है जिस पर हम महत्व और सुरक्षा के लिए भरोसा करते हैं, न कि ईश्वर पर।

और प्रभु जीवन का सोता है। वह वह स्थान है जहाँ आपको जीवन का जल मिलता है। यीशु ने यूहन्ना 4 और यूहन्ना 7 में इसके बारे में बात की थी, लेकिन लोगों ने देवताओं की पूजा करना चुना था जो अंततः टूटे हुए कुंड होंगे।

वे सुरक्षा, महत्व और आशीर्वाद के लिए उनकी ओर देखेंगे। और वे देवता अंततः उनके लिए उत्पादन नहीं करेंगे। यिर्मयाह का कहना है कि यहूदा के लोगों के पास उतनी ही मूर्तियाँ हैं जितने उनके पास शहर हैं, और उनमें से कोई भी मूर्तियाँ उनकी मदद करने वाली नहीं हैं।

और वास्तव में कई मायनों में, यहूदा के लोगों की कट्टरपंथी मूर्तिपूजा बिल्कुल कुछ ऐसी थी जिसे भगवान स्वयं नहीं समझ सकते थे। यिर्मयाह 2.11, किस अन्य राष्ट्र ने कभी अपने देवताओं को त्याग दिया है? खैर, इज़राइल सच्चे ईश्वर को जानता है, और उन्होंने उसे त्याग दिया है। क्या कोई दुल्हन अपनी सगाई की अंगूठी और अपनी शादी के गहने भूल जाती है? नहीं, परन्तु मेरे लोग मुझे भूल गये हैं।

और इसलिए यिर्मयाह अध्याय 2 में ठीक सामने, पुस्तक के पहले महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक, प्रभु मूर्तिपूजा के मुद्दे को संबोधित करने जा रहे हैं। हम इस मूर्तिपूजा की गहराई, इसके द्वारा लाई गई भ्रष्टा और बुतपरस्त रीति-रिवाजों को देखते हैं जो इसका हिस्सा थे, जिन्हें यिर्मयाह अध्याय 7, श्लोक 30 से 36 में संबोधित किया गया है। प्रभु यह कहते हैं, क्योंकि यहूदा के पुत्रों ने बुराई की है मेरी दृष्टि, प्रभु की वाणी है।

उन्होंने उस घर में अपनी घृणित वस्तुएं रखी हैं, जिस ने उसे अशुद्ध करने के लिये मेरा नाम लिया है। उन्होंने इन मूर्तियों को मंदिर में रख दिया। उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को आग में जलाने के लिये हिन्नोमियों की तराई में तोपेट के ऊंचे स्थान बनाए, जिसकी आज्ञा मैं ने न दी, और न मेरे मन में आया।

और इसलिए, प्रभु कहते हैं, उन्होंने न केवल अन्य देवताओं की पूजा की है, बल्कि उन्होंने मंदिर में मूर्तियाँ भी लायी हैं। उन्होंने हिन्नोम की घाटी में मंदिर स्थापित किए हैं, जो यरूशलेम के ठीक बाहर था। और उन्होंने इन मूर्तिपूजक देवताओं के लिए पवित्र स्थल बनाए हैं, जिनमें वास्तव में बच्चों की बलि शामिल थी, और इन देवताओं की पूजा से जुड़े अनुष्ठानों में वास्तव में बच्चों की बलि शामिल थी।

इस तरह से इस्राएल का पतन हो गया था। हम ऐतिहासिक किताबों में पढ़ते हैं कि आहाज और मनश्शे जैसे राजा थे जिन्होंने वास्तव में अपने बच्चों की बलि दी थी। कोई भी समाज जो बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार करता है, वह परमेश्वर की नज़र में निंदनीय है।

और इसलिए मूर्तिपूजकों के रूप में उनके साथ यही हुआ। यह उनके समाज में इस हद तक घुस गया था। यिर्मयाह अध्याय 10, यिर्मयाह उनकी मूर्तिपूजा के बारे में व्यंग्यात्मक तरीके से बात करता है।

और वह अध्याय 10, श्लोक 5 में मूर्तियों के बारे में यह बयान देता है। वह कहता है कि मेरे लोग जिन मूर्तियों की पूजा करते हैं वे खीरे के खेत में बिजूकों की तरह हैं। वे बोल नहीं सकते, और उन्हें उठाकर ले जाना पड़ता है क्योंकि वे चल नहीं सकते। तो, हममें से कितने लोग खीरे के खेत में बिजूका के सामने झुकना चाहेंगे? इस्राएल की मूर्तियाँ ऐसी ही बन गई थीं।

और इसलिए, मूर्तिपूजा का तथ्य, मूर्तिपूजा की समस्या, मूर्तिपूजा का मुद्दा, यिर्मयाह की पूरी किताब में बहुत अधिक है। वास्तव में, जैसे ही हम उस अंतिम संदेश पर आते हैं जिसे यिर्मयाह ने कभी भी यिर्मयाह की पुस्तक में प्रचारित किया है, यिर्मयाह अध्याय 44 में उसका अंतिम सार्वजनिक उपदेश है, यिर्मयाह मिस्र में है, और वह उन शरणार्थियों का सामना कर रहा है जो मिस्र में अपनी बुतपरस्त प्रथाओं के साथ हैं। और वह उनसे कहता है कि उन्हें उन चीज़ों को हटा देना चाहिए, क्योंकि इससे प्रभु अप्रसन्न होते हैं।

यहां लोगों की प्रतिक्रिया है। वे यह कहते हैं: जो वचन तू ने यहोवा के नाम से हम से कहा है, हम तेरी न सुनेंगे। अब, मैंने कई उपदेश दिए हैं, और लोगों ने अक्सर मेरी बात नहीं सुनी है।

मुझसे हाथ मिलाने के बाद वे बहुत कम ही मुझे बताते हैं कि जब वे चले जाएंगे तो वे यही करेंगे। परन्तु उन्होंने यिर्मयाह से यही कहा। और फिर वे यह कहते हैं: हम वह सब कुछ करेंगे जो हमने कसम खाई है।

हम स्वर्ग की रानी, मेसोपोटामिया और कनान के प्रजनन देवताओं को प्रसाद चढ़ाएंगे। हम उसके लिये अपना पेय-बलि उण्डेलेंगे जैसा हमने और हमारे पुरखाओं, राजाओं और हाकिमों ने किया था। हम मूर्ति पूजा बंद नहीं करेंगे।

और इसलिए, यिर्मयाह की पुस्तक उस पड़ाव पर पहुँचती है जहाँ प्रभु ने उन्हें उनकी मूर्तिपूजा के लिए दंडित किया है। उसने निर्वासन का न्याय भेजा, लेकिन उन्होंने अभी भी नहीं सीखा है। और पुस्तक के अंत में, वे कह रहे हैं, हम अभी भी अपनी मूर्तियों की पूजा करने जा रहे हैं।

वाचा और इन देवताओं की वास्तविकता के बारे में उनकी समझ इतनी विकृत हो गई थी कि वे कहते हैं, आप जानते हैं, हमारे साथ ये सभी आपदाएँ इसलिए हुई हैं क्योंकि योशियाह ने ये सुधार किए थे, जिन्होंने हमारे देवताओं और हमारी मूर्तिपूजा प्रथाओं को खत्म कर दिया। और इसीलिए हमने इन सभी बुरी चीज़ों का अनुभव किया है। इसलिए, यिर्मयाह की पुस्तक और सामान्य रूप से भविष्यवक्ताओं में मूर्तिपूजा एक प्रमुख मुद्दा है।

अब, हमने कहा कि ये प्रमुख जीवन के मुद्दे हैं जो हमसे संबंधित हैं, लेकिन मुझे ईमानदार होना होगा कि जैसा कि मैंने पुराना नियम पढ़ा है, कई बार जब मैं इज़राइल के लोगों के बीच मूर्ति पूजा के पाप के बारे में सुनता हूँ, तो मैं सवाल पूछता हूँ, ये लोग इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं? मुझे

वास्तव में खुशी है कि मुझे उन तरीकों से सूचित किया गया है जो नहीं हैं क्योंकि मुझे मूर्तियों से यह समस्या नहीं है। और मैं मूर्तिपूजा के बारे में इन निषेधों या मूर्तिपूजा के बारे में इन निंदाओं को पढ़ता हूँ और कहता हूँ, आप जानते हैं, बाइबिल में बहुत सारे पाप हैं जिनसे मुझे निपटना है। लेकिन मूर्तिपूजा उन चीजों में से एक है जिन्हें मैंने अपनी सूची से हटा दिया है।

मैं झूठे देवताओं की पूजा में विश्वास नहीं करता। मेरे लिविंग रूम में 50 इंच के टेलीविजन के अलावा, मेरे पास ऐसी कोई छवि नहीं है जिसके सामने मैं अक्सर नतमस्तक हो जाऊँ। लेकिन जैसा कि मैंने देखा है कि भविष्यवक्ता और पुराना नियम वास्तव में मूर्तिपूजा के बारे में क्या कहते हैं, यह जीवन का प्रमुख मुद्दा है जिससे मुझे लगातार अपने जीवन में निपटना पड़ता है।

मुझे लगता है कि यह मुख्य मुद्दा है जिससे हम सभी, यीशु के अनुयायियों के रूप में निपटते हैं। कुछ अंशों ने मुझे इसे समझने में मदद की है। कुलुस्सियों के अध्याय तीन, श्लोक पाँच में, पॉल कहता है कि लोभ या लोभ मूर्तिपूजा है।

इसलिए, हो सकता है कि आपके पास ऐसी छवियाँ न हों जिन्हें देखकर आप अपनी वफ़ादारी न कर सकें और बाइबल के ईश्वर के अलावा अन्य देवताओं से प्रार्थना न कर सकें। लेकिन अगर आपको लोभ से समस्या है तो आप मूर्तिपूजक हैं। केल्विन ने कहा कि मानव हृदय एक मूर्ति का कारखाना है।

और हमारी संस्कृति में, हम जिस मुख्य मूर्ति की पूजा करते हैं वह है धन और संपत्ति। और इसलिए सातवीं शताब्दी में, छठी शताब्दी में, जब यिर्मयाह सेवकाई कर रहा था, यरूशलेम में मूर्ति समस्या थी। आज भी हमारे पास मूर्तियों के साथ एक समस्या है।

कनानी लोगों के देवता बाल का इस्राएल के लोगों के लिए लगातार आकर्षण का मुख्य कारण यह है कि इस्राएल के आस-पास की संस्कृति में यह सिखाया जाता था कि बाल तूफ़ान का देवता था। वह ऐसा देवता था जो बारिश लाता था और उन्हें और उनकी फसलों को आशीर्वाद देता था, उर्वरता लाता था। उनसे जुड़ी देवियाँ उनकी पत्नियों को बच्चे पैदा करने में सक्षम बनाती थीं।

दूसरे शब्दों में, इन देवताओं ने उन नैतिक आवश्यकताओं के बिना समृद्धि का वादा किया जो परमेश्वर ने अपने लोगों पर रखी थीं। यह एक बहुत बड़ा आकर्षण था। और इसलिए, हमारे समाज में, जब हम भौतिकवाद के बारे में सोचते हैं, जब हम धन के बारे में सोचते हैं, जब हम संपत्ति के बारे में सोचते हैं, तो हमें उन्हें सिर्फ़ भौतिक चीज़ों के रूप में देखने से परे देखने की ज़रूरत है।

इसके साथ एक आध्यात्मिक मुद्दा जुड़ा हुआ है क्योंकि धन और संपत्ति एक मूर्ति बन जाती है। जब हम उन्हें अपनी सुरक्षा और महत्व के स्रोत के रूप में देखते हैं, और हम उन चीज़ों को प्यार, भक्ति और पूजा देते हैं जो केवल भगवान की हैं, तो हमारे समाज में निश्चित रूप से यही मुद्दा है। अय्यूब 31, जब अय्यूब भगवान के सामने अपनी बेगुनाही का विरोध कर रहा है, तो वह पापों की एक लंबी सूची देता है जो उसने नहीं किए हैं।

वह कहता है कि उसने सोने या अपनी दौलत पर भरोसा नहीं किया है। वह इसे सूर्य और चंद्रमा की ओर चुंबन करने या देवताओं की ओर झुकने जैसे बुतपरस्त संस्कारों के बराबर मानता है। दूसरे शब्दों में, धन और संपत्ति से प्रेम करना उतना ही बुतपरस्त है जितना कि किसी मूर्ति के आगे झुकना।

पुराना नियम हमें यह भी समझने में मदद करता है कि मूर्तिपूजा तब होती है जब हम संस्कृति के झूठ के आगे झुक जाते हैं। इस्राएल के लोगों के चारों ओर, उनके पास सत्य था। इस्राएल के लोग, वे सच्चे परमेश्वर को जानते थे।

लेकिन उनके चारों ओर एक संस्कृति थी जिसकी एक और कहानी थी। और यह कहानी थी बाल और कनानी देवताओं की और कैसे वे देवता सुरक्षा और धन, आशीर्वाद, आनंद और जीवन में खुशी प्रदान कर सकते थे जिसकी तलाश इस्राएलियों को थी।

इस्राएलियों ने मूर्तिपूजा में तब विश्वास किया जब उन्होंने वैकल्पिक कहानी को स्वीकार कर लिया। और एक ईसाई के रूप में, मैं अक्सर खुद को हमारी संस्कृति की वैकल्पिक कहानी को स्वीकार करते हुए पाता हूँ। वह आनंद या धन या संपत्ति या सफलता या संपत्ति या कैरियर, इनमें से कोई भी चीज़।

जब हम उन झूठों पर विश्वास करते हैं, तो हम उसी तरह की मूर्तिपूजा में शामिल हो जाते हैं, जैसा कि इस्राएल के लोगों ने किया था। एक और मार्ग जिसने मुझे इस बारे में मदद की है वह है यहजेकेल अध्याय 14। जब भविष्यवक्ता यहजेकेल यहूदा के लोगों को उनकी मूर्तिपूजा के बारे में बताने के लिए आता है, तो वह केवल यह नहीं कहता है कि , आपके पास एक समस्या है क्योंकि आपने इन मूर्तियों का निर्माण किया है और उन्हें नमन किया है।

वह कहते हैं कि असली मुद्दा यह है कि आपने ये मूर्तियाँ बनाई हैं, और आपने इन छवियों को अपने दिल में बसा लिया है। और इसलिए, मेरे पास कोई भौतिक छवि या कोई वैकल्पिक धार्मिक व्यवस्था नहीं हो सकती है जिसके प्रति मैं अपनी निष्ठा रखता हूँ, लेकिन मेरे दिल में जो कुछ भी है जो मेरे पूर्ण प्रेम, भक्ति और ईश्वर की सेवा को दूर करता है वह एक मूर्ति बन जाती है। और इसलिए, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं, जीवन का वह मुद्दा जिसे वे बार-बार लोगों के सामने रखते हैं, मूर्तिपूजा का मुद्दा था।

और यह आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है। पैगम्बरों में जीवन से जुड़ा दूसरा बड़ा मुद्दा है, और वह है सामाजिक अन्याय का मुद्दा। और फिर, मुझे लगता है कि यह उनके लालच और मूर्तिपूजा का सीधा परिणाम था।

जब आप पैसे की पूजा करते हैं और उससे प्यार करते हैं, तो आप उसे किसी भी तरह से पाने के लिए बेताब हो जाते हैं। आखिरकार, अगर इसका मतलब अपने पड़ोसियों को लूटना, उनके साथ बुरा व्यवहार करना या परमेश्वर द्वारा आपको दी गई वाचा के आदेशों का पालन न करना है, तो यह समस्या का एक हिस्सा था। यह उनकी मूर्तिपूजा से भी संबंधित था।

जब इस्राएल ने सच्चे ईश्वर की पूजा की, जो करुणा का ईश्वर था, एक ऐसा ईश्वर जिसने मिस्र में गुलामी में रह रहे लोगों पर विचार किया और उन्हें उनके बंधन से मुक्त किया, जब आप उस तरह के ईश्वर की पूजा करते हैं, तो इससे गरीबों और जरूरतमंदों के प्रति एक खास रवैया विकसित होता है। जब आप कनान के देवताओं की पूजा करते हैं, जिन्होंने हिंसा, हत्या, दूसरों के साथ दुर्व्यवहार, जो वे चाहते हैं उसे लेकर, कई तरह से अपनी शक्ति स्थापित की, तो कनान के देवता सिर्फ इंसान हैं जो अपनी सभी समस्याओं, अपनी वासनाओं, अपने पापों के साथ बड़े पैमाने पर हैं। जब आप उन तरह के देवताओं की पूजा करते हैं, तो यह आपको मानवीय क्षेत्र में उन्हीं चीजों को करने का औचित्य देता है।

और इसलिए, भविष्यवक्ता इस तथ्य के बारे में बहुत चर्चा करते हैं कि इज़राइल गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करने की अपनी वाचा की जिम्मेदारियों को पूरा नहीं कर रहा था। वे अपने ही लालच में फँस गये थे। यह उस प्रकार के समाज के बिल्कुल विपरीत था जिसके लिए ईश्वर ने इसराइल को डिज़ाइन किया था।

इस्राएल और यहूदा के राजाओं ने लोगों से ज़मीन लेकर और सब कुछ अपनी शक्ति और धन के अधीन करके इसमें योगदान दिया था, और यह सब चल रहा था। जब 8वीं शताब्दी में पैगंबर पहली बार परिदृश्य में आए, तो इज़राइल ने अब तक की सबसे बड़ी समृद्धि का अनुभव किया। और यह सब एक ऐसे समाज में समाप्त हो गया है जहाँ लोग एक-दूसरे की परवाह नहीं करते हैं और जहाँ वे एक-दूसरे के साथ उस तरह से व्यवहार नहीं कर रहे हैं जैसा भगवान ने बनाया है।

व्यवस्थाविवरण 15, प्रभु कहते हैं, गरीब सदैव तुम्हारे बीच रहेंगे। और यही हकीकत है। परन्तु व्यवस्थाविवरण 15, श्लोक 11 में, मैं ने तुम्हें ये व्यवस्था दी है, कि तुम्हारे बीच कोई कंगाल न रहे।

यही आदर्श था। भगवान जानते थे कि हमेशा गरीब लोग रहेंगे। हमेशा असमानताएँ रहेंगी।

लेकिन प्रभु चाहते थे कि इस्राएल ऐसा समाज बने जहाँ ऐसी चीजें न हों। और इसलिए, पुराने नियम के कानून हमें इस तरह के नियम देते हैं। निर्गमन 22 में, यदि आप अपने पड़ोसी को ऋण देते हैं और उसे अपना कपड़ा आपको गिरवी रखना पड़ता है कि वह इसे वापस कर देगा, तो सुनिश्चित करें कि आप हर रात उसका कपड़ा उसे वापस करें।

ताकि रात को सोते समय उसे ठंड न लगे। व्यवस्थाविवरण अध्याय 15, श्लोक 1, हर सात साल में देश में मौजूद ऋणों को माफ कर देता है। और मैं जानता हूँ कि मेरे कई छात्र जिन्होंने छात्र ऋण लिया है, वे आज उस अभ्यास को देखना चाहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 23, जो ऋण तू अपने साथी इस्राएलियों को देता है उस पर ब्याज न लेना। लैव्यव्यवस्था 19 और व्यवस्थाविवरण अध्याय 24 गरीब लोगों को आपके खेतों में आने और कोनों में बीनने और अतिरिक्त बीनने की अनुमति देते हैं क्योंकि आपको उन सभी की आवश्यकता नहीं है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 15, तुम्हें अपने दासों, इब्रानी ऋण सेवकों को हर सात साल में रिहा करना होगा।

और जब हम यिर्मयाह अध्याय 34 और 35 में आते हैं, तो हम सीखते हैं कि यहूदा के लोग उस आज्ञा के अनुसार नहीं जी रहे थे। व्यवस्थाविवरण 24, गरीबों और जरूरतमंदों का फायदा मत उठाओ। व्यवस्थाविवरण 10 श्लोक 18, विधवाओं और अनाथों की देखभाल करना।

लेवितिकस अध्याय 25, यदि आपका गरीब रिश्तेदार जरूरतमंद है, तो उसे कर्ज से मुक्त करें या उसकी संपत्ति वापस दिलाएँ जिसे उसे बेचना पड़ा है। लेवितिकस 25 यह भी कहता है कि हर 50 साल में एक जुबली वर्ष होता है, जिसमें सब कुछ अपने मूल मालिक को वापस मिल जाता है और हर कर्ज माफ कर दिया जाता है। यह पुराने नियम की नैतिकता का हिस्सा है।

डेविड बेकर ने अपनी पुस्तक टाइट फिस्ट ऑर ओपन हैंड्स में हमें याद दिलाया है कि कैसे पुराने नियम का कानून सिर्फ एक और प्राचीन पूर्वी कानून संहिता नहीं है। कई मायनों में, गरीबों और जरूरतमंदों के लिए इन चिंताओं पर विशेष रूप से इसराइल में जोर दिया गया था। और भले ही वे बिल्कुल अनोखे न हों, लेकिन परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए जो कानून दिया था, उसमें ऐसे प्रावधान थे जो इसे पुराने नियम की संस्कृति में मौजूद किसी भी चीज़ से पूरी तरह अलग बनाते हैं।

भविष्यवक्ता लोगों को उस तरह की नैतिक जिम्मेदारी की ओर वापस बुला रहे हैं। तो फिर से, यिर्मयाह के संदेश के साथ चलते हुए, मैं कुछ ऐसे अंशों पर प्रकाश डालना चाहूँगा जहाँ हम इसे देखते हैं। यशायाह अध्याय 5, श्लोक 8 से 10, मैंने पहले ही पाठ में इस अंश का उल्लेख किया है।

हाय उन लोगों पर जो घर को घर से और खेत को खेत से जोड़ते हैं जब तक कि जगह नहीं बचती, और तुम देश के बीच में अकेले रहने को मजबूर हो जाते हो। सेनाओं के यहोवा ने मेरे सामने शपथ ली है। निश्चय ही, बहुत से घर उजाड़ हो जाएँगे, बड़े और सुंदर घर बिना निवासियों के।

10 एकड़ के अंगूर के बाग से सिर्फ एक बत पैदावार होगी, और एक हम्मर बीज से सिर्फ एक एफ़ा पैदावार होगी। उन्होंने गरीबों का फ़ायदा उठाया था। उन्होंने जरूरतमंद लोगों की ज़मीनें हासिल करने के लिए कई तरह से कर्ज और ऋण का इस्तेमाल किया था।

और परमेश्वर कहता है कि मैं उन ज़मीनों को छीन लूँगा जिन्हें तुमने दूसरों से चुराया है। आमोस अध्याय 2 कहता है कि देश में दुष्ट लोग गरीबों को एक जोड़ी चप्पल के लिए बेच देते हैं। एक पिता और उसका बेटा एक ही दासी के साथ यौन अनैतिकता करते हैं।

वे अपने पड़ोसी से लिया गया लबादा ओढ़कर लेट जाते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के भवन में उसकी आराधना करने के लिए आते हैं। निर्गमन में वह अंश याद है जिसमें कहा गया था कि उन्हें वह लौटाना था? वे चोरी की वस्तुओं से परमेश्वर की आराधना कर रहे थे। यिर्मयाह अध्याय 7 में, यिर्मयाह के प्रसिद्ध मंदिर उपदेश में, यिर्मयाह लोगों को याद दिलाता है, देखो, यदि तुम देश में रहना चाहते हो, यदि तुम वाचा के आशीर्वाद का आनंद लेना चाहते हो, तो तुम्हें अपने पड़ोसियों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना होगा।

यिर्मयाह वास्तव में दस आज़ाएँ लेता है, और वह उन्हें पलट देता है। वह सामाजिक न्याय के महत्व पर जोर देने के लिए पहले आज़ाओं के दूसरे भाग और दूसरे में आज़ाओं के पहले भाग के बारे में बात करते हैं। भविष्यवक्ताओं में मेरी पसंदीदा छवियों में से एक मीका अध्याय 3 में है। मीका कहता है कि दुष्ट, धनवान, यहूदा के नेता उन लोगों की तरह हो गए हैं जो अपने लोगों को लेते हैं, और वे उन्हें एक बर्तन में काटते हैं, और वे उन्हें पकाते हैं, और वे उन्हें रात के खाने में खाते हैं।

जाहिर है, यहूदा नरभक्षण का अभ्यास नहीं कर रहा था, लेकिन प्रभु इन कामों को करके क्या कह रहा था जहाँ आप गरीबों से जबरन वसूली करते हैं, आप उनकी ज़मीन लेते हैं, आप उनकी आजीविका चुराते हैं, आप उन्हें उन चीज़ों का आनंद लेने से वंचित करते हैं जो भगवान ने उन्हें दी थीं, उनकी विरासत, आप नरभक्षी की तरह ही बुरे बन गए हैं। इसके परिणामस्वरूप, लोग भगवान की उपस्थिति में नहीं आ सकते थे और उनकी पूजा नहीं कर सकते थे और उनसे प्यार करने का दिखावा नहीं कर सकते थे और बलिदान नहीं कर सकते थे और ये सब काम नहीं कर सकते थे जबकि वे गरीबों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे थे। आज ईसाई चर्च और अमेरिकी इंजीलवाद में, हम इस तथ्य के बारे में अधिक से अधिक जागरूक हो रहे हैं कि हमारे सुसमाचार मंत्रालय में एक सामाजिक मंत्रालय भी शामिल है।

ऐसा इतिहास रहा है जहाँ रूढ़िवादी इंजीलवाद सामाजिक सुसमाचार से जुड़ना नहीं चाहता था। परिणामस्वरूप, हम अक्सर उन जिम्मेदारियों के बारे में भूल जाते हैं जो परमेश्वर ने हमें न केवल चर्च के सहायक मंत्रालय के हिस्से के रूप में दी हैं, बल्कि हमारा आह्वान गरीबों और ज़रूरतमंदों की देखभाल करना है, सुसमाचार के हमारे मंत्रालय के हिस्से के रूप में लोगों की शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करना है। मैं आभारी हूँ कि हम इसके लिए फिर से जागृत हो रहे हैं।

डेविड प्लैट की पुस्तक, रेडिकल ने हमें उन जिम्मेदारियों की याद दिलाई है। समस्या यह है कि कई मायनों में, मेरा मानना है कि चर्च ने इन जिम्मेदारियों की उपेक्षा इसलिए की है क्योंकि हमने भविष्यवक्ताओं की उपेक्षा की है। और अगर हम अपने चर्चों में मूसा के कानून की शिक्षा दे रहे होते, अगर हम अपने बच्चों को पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का उपदेश दे रहे होते, तो हम इन जिम्मेदारियों को नहीं भूलते क्योंकि वे परमेश्वर के लोगों के रूप में हमारे काम के लिए बिल्कुल केंद्रीय हैं।

वे कभी भी सुसमाचार मंत्रालय का स्थान नहीं लेते हैं, और वे बुरे धर्मशास्त्र का स्थान नहीं लेते हैं, लेकिन वे हमारे मिशन और चर्च में हमारी बुलाहट का हिस्सा हैं। क्या आपको व्यवस्थाविवरण 15 का वह अंश याद है? इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना यह थी कि परमेश्वर के लोगों में कोई गरीब न हो। अब, यदि आप सोचते हैं कि यह केवल पुराना नियम है या यह केवल इसराइल के लिए है, तो मैं आपको एक तस्वीर याद दिलाना चाहता हूँ जो भगवान ने हमें प्रेरितों के काम अध्याय 4 में प्रारंभिक चर्च से दी है। यह कहता है कि जिनके पास ज़रूरत से ज्यादा था, उन्होंने वही बेच दिया उनके पास था और उन्होंने इसे ज़रूरतमंदों को दिया।

आरंभिक चर्च में लोगों के बीच कोई गरीब नहीं था। मुझे यह महसूस करना होगा कि ल्यूक, उस मार्ग में, व्यवस्थाविवरण अध्याय 15 और उन लोगों की ओर इशारा कर रहा है जो इज़राइल बनने

में विफल रहा था और इस नए इज़राइल में बनने में विफल रहा था जिसे भगवान स्थापित कर रहे थे। प्रभु इसे वास्तविकता बनने में सक्षम बना रहे थे।

हमारे चर्चों और हमारे समुदायों में, प्रभु चाहते हैं कि हम एक नए इस्राएल का नया प्रतिनिधित्व करें। इस्राएल एक आदर्श था कि परमेश्वर के लोगों को कैसा दिखना चाहिए। तुम्हारे बीच कोई गरीब नहीं होगा।

वे आरंभिक चर्च में इसे पूरा कर रहे थे क्योंकि वे अपनी जिम्मेदारी के उस हिस्से को समझते थे। एक तीसरा और अंतिम मुद्दा है, और वास्तव में यह एक संबंधित जीवन मुद्दा है। तीसरा मुद्दा जिससे इस्राएली निपटने जा रहे हैं वह है झूठी उपासना की समस्या, झूठी उपासना की समस्या।

और कई मायनों में, आज हमारे चर्चों में, ईसाइयों के बीच होने वाली कई लड़ाइयाँ उपासना के मुद्दों पर होती हैं। और कई बार, यह प्रचार शैली, हमारे पवित्र स्थान को कैसा दिखना चाहिए, संगीत और उपासना की शैली के बारे में होता है। ये वास्तव में बाहरी मुद्दे हैं।

भविष्यवक्ता आराधना के विशिष्ट हृदय से अधिक बात करने जा रहे हैं। जिस मुद्दे को भविष्यवक्ता बार-बार उठाने जा रहे हैं, वह यह है कि अनुष्ठान और बलिदान और संगीत और प्रार्थनाएँ जो परमेश्वर के लोग प्रभु को अर्पित कर रहे थे, वे उसे अस्वीकार्य थे। उनके अस्वीकार्य होने का कारण यह नहीं था कि वे केवल औपचारिकताएँ निभा रहे थे, बल्कि यह सिर्फ एक अनुष्ठान बन गया था।

वे अस्वीकार्य थे क्योंकि उन प्रथाओं और अनुष्ठानों के पीछे कोई जीवनशैली नहीं थी। और इसलिए अक्सर भविष्यवक्ताओं के माध्यम से, वे इस मुद्दे को संबोधित करने जा रहे हैं, भगवान आपके द्वारा चढ़ाए जा रहे बलिदानों से प्रसन्न नहीं हैं। भगवान उन अनुष्ठानों में उतनी रुचि नहीं रखते हैं जिनसे आप गुजरते हैं।

वह उस पूजा के साथ-साथ एक आज्ञाकारी जीवन शैली में अधिक रुचि रखता है। प्राचीन निकट पूर्व के देवताओं के विपरीत, भविष्यवक्ता हमें याद दिलाते हैं कि इज़राइल के ईश्वर को अनुष्ठानों और बलिदानों द्वारा हेरफेर नहीं किया जा सकता है। अक्सर इन प्राचीन निकट पूर्वी धर्मों में, जब कोई आपदा आती थी, तो वे मंदिर या पुजारी के पास जाने की कोशिश करते थे और पता लगाते थे कि हमने देवताओं को नाराज करने के लिए क्या किया है। और शायद अगर हम देवताओं को अधिक मांस या अधिक बीयर या अधिक शराब अर्पित करें, तो वे हमसे खुश होंगे।

लेकिन भविष्यवक्ता जो कहने जा रहे हैं वह यह है कि ईश्वर को अनुष्ठानों और बलिदानों से प्रभावित नहीं किया जा सकता है। आप कानून का उल्लंघन करके अपने पड़ोसी से प्रतिज्ञा के रूप में लिए गए कपड़े का लबादा पहनकर मंदिर में नहीं जा सकते और भगवान के लिए बलिदान और प्रार्थना नहीं कर सकते। यशायाह 1 में, भविष्यवक्ता यशायाह कहते हैं, तुम अपने हाथ परमेश्वर से प्रार्थना में उठाते हो, परन्तु तुम्हारे हाथ खून से लथपथ हो जाते हैं।

और प्रभु कहते हैं, बेकार में बलि चढ़ाना और मेरे आँगन को रौंदना बंद करो। मैं अब तुम्हारी प्रार्थनाएँ भी नहीं सुनना चाहता क्योंकि मैं तुम्हारे शब्द नहीं सुन पाता। मैं तुम्हारे हाथ देख रहा हूँ।

मीका अध्याय 6 भविष्यवक्ताओं के महान अंशों में से एक है। परमेश्वर अपने लोगों के रूप में हमसे क्या चाहता है? क्या हमें उसके लिए भव्य बलिदान, तेल की नदियाँ, सैकड़ों और हज़ारों जानवर लाने चाहिए? क्या यह परमेश्वर को प्रसन्न करता है? उत्तर है नहीं। क्या हमें उसके लिए अपना पहला बच्चा लाना चाहिए और शायद वह सर्वोच्च बलिदान देना चाहिए जो इन मूर्तिपूजक उपासकों में से कई करते हैं? परमेश्वर भी यही नहीं चाहता।

परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है कि वे न्याय करें। वे दया से प्रेम करें। वे परमेश्वर के सामने नम्रता से चलें।

नबी आमोस कहते हैं, मुझे तुम्हारे संगीत से नफ़रत है। मुझे तुम्हारे बलिदानों से नफ़रत है। मुझे तुम्हारे रीति-रिवाज़ों से नफ़रत है।

न्याय को नदी की तरह बहने दो। और यिर्मयाह अध्याय 7 की आयत 21 से 23 में इस मुद्दे को संबोधित करने जा रहा है और हम उस अंश पर वापस आएँगे। लेकिन प्रभु कहते हैं, तुलनात्मक रूप से कहें तो, जब मैंने तुम्हें व्यवस्था दी थी, तो प्राथमिक ध्यान अनुष्ठानों और बलिदानों के बारे में आज्ञाओं पर नहीं था।

यह आज्ञाकारिता के बारे में था। और जब आप अपनी होमबलि चढ़ाते हैं, तो आप मांस भी खा सकते हैं क्योंकि आपकी भेंट बेकार है। भविष्यवक्ता अनुष्ठानों के विरोधी नहीं थे।

पैगम्बरों के बारे में पहले यह समझ थी कि वे नैतिक एकेश्वरवाद में शुरुआती थे और उन्होंने सभी अनुष्ठानों को अस्वीकार कर दिया था। पैगम्बरों ने अनुष्ठानों पर भी जोर दिया, कि वे ईश्वर की आज्ञाकारिता का हिस्सा थे। ईश्वर ने इन बलिदानों की स्थापना की थी।

परमेश्वर ने इन प्रथाओं को स्थापित किया था, लेकिन जीवनशैली से अलग ये प्रथाएँ परमेश्वर की इच्छा नहीं थीं। और इसलिए, जब हम भविष्यवक्ताओं के संदेश को देखते हैं, तो ये तीनों बातें एक साथ मिल जाती हैं। मूर्तिपूजा पर जोर दिया गया है और सुरक्षा या भक्ति के हमारे अंतिम स्रोत के रूप में परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ को देखने की समस्या है।

सामाजिक न्याय की समस्या है और लोग अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं कर रहे हैं, न सिर्फ़ ईश्वर के प्रति, बल्कि एक-दूसरे के प्रति भी। और फिर झूठी उपासना का मुद्दा है, सही दिल और सही जीवनशैली के बिना ईश्वर के पास आना। और इसलिए, जब हम भविष्यवक्ताओं के प्रकाश में उपासना के बारे में सोचते हैं, तो यह सिर्फ़ एक मुद्दा नहीं है।

हम किस तरह का संगीत बजाते हैं? आपकी पूजा-पद्धति कैसी है? आपका अनुष्ठान कैसा है? भविष्यवक्ता हमसे यह सवाल पूछेंगे कि आपका जीवन कैसा है? और क्या आपका हृदय ईश्वर की इच्छा के अनुरूप है? क्या आप ईश्वर से पूरे हृदय से प्रेम करते हैं? या फिर, किसी तरह से, आपकी उसके प्रति प्रतिबद्धता मूर्तियों के प्रति इच्छा और प्रेम के कारण भ्रष्ट हो रही है? जॉन कहते हैं, अपने हृदय को मूर्तियों से दूर रखें। और जब हम भविष्यवक्ताओं को देखेंगे और साथ

मिलकर यिर्मयाह की पुस्तक का अध्ययन करेंगे, तो हमें इसकी याद दिलाई जाएगी। यह डॉ. गैरी येट्स हैं जो हमें यिर्मयाह की पुस्तक की प्रस्तुति में मार्गदर्शन कर रहे हैं।

यह डॉ. गैरी येट्स हैं, जो हमें यिर्मयाह की पुस्तक की प्रस्तुति में आगे बढ़ा रहे हैं। सत्र 2 में। वे पुराने नियम के भविष्यवक्ता के रूप में यिर्मयाह की चर्चा जारी रखेंगे। दूसरे सत्र में, वे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संबंध में आम गलतफहमियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।